डेपो प्रोवेरा : क्या है?

अभी नॉरप्लांट का ख़तरा पूरी तरह से टला ही नहीं था कि सरकार ने खतरनाक गर्भ-निरोधक इंजेक्शन डेपो-प्रोवेरा औरतों को लगाने के आदेश जारी कर दिए। महिला संगठनों ने इसके ख़िलाफ़ प्रदर्शन करने का फ़ैसला किया। नारे और प्रदर्शन के शोर-शराबे के साथ इस आदेश को वापस लेने की माँग रखी गई।

डेपो-प्रोवेरा है क्या?

डेपो-प्रोवेरा यानी डेपो मेडरॉक्स प्रोजेस्टरॉन ऐसिटेट अमरीका की अपजॉन कम्पनी ने बनाया है। यह एक इंजेक्शन के रूप में औरतों को बांह में लगाया जाता है। हर तीन महीने के अंतराल पर लगाया जाने वाला यह इंजेक्शन बच्चा ठहरने नहीं देता। यानी एक बार लगवा लेने पर औरतों को तीन महीने तक आराम। पर यह किस कीमत पर? हमारे शरीर और सेहत के बदले?

डेपो-प्रोवेरा यानी डेपो मेडरॉक्सी प्रोजेस्टरॉन ऐसिटेट अमरीका की अपजॉन कम्पनी ने बनाया है। यह एक इन्जेक्शन के रूप में तीन महीने पर लगाया जाने वाला इंजेक्शन है जो बच्चा ठहरने नहीं देता।

भारत में अब सरकार ने यह इंजेक्शन लगाने की छूट दे दी है। पर अभी तक भारत में इस निरोधक का परीक्षण नहीं किया गया है। यानी हम यह नहीं जानते कि इसको लगाने से हमें क्या फ़ायदे और नुकसान हैं। हमारे शरीर में क्या-क्या तकलीफ़ें हो सकती हैं। हमारे आगे होने वाले बच्चों पर इसका क्या असर होगा और हम इस्तेमाल के बाद दोबारा गर्भ-धारण कर भी पाएंगे या नहीं। पर हम दूसरे देशों से सबक ले सकते हैं।

एक ख़तरनाक शुरुआत

अमरीका में 1992 तक डेपो-प्रोवेरा इंजेक्शन औरतों को लगाने की अनुमति नहीं दी गई थी। मालूम चला था कि यह गर्भ निरोधक सुरक्षित नहीं था। इसलिए विकसित होने के पच्चीस सालों बाद भी यह आम गर्भ निरोधकों की तरह बाज़ार में उपलब्ध नहीं था। है न आश्चर्य की बात, जिस देश ने यह तैयार किया वहीं यह इस्तेमाल नहीं हो रहा था?

सन् 1960 में अपजॉन कम्पनी ने कुत्तों पर सात साल तक और दस साल तक बन्दरों पर इस इंजेक्शन का परीक्षण किया था। लगाने के साढ़े तीन महीने के बीच ही कुत्ते मर गए। कारण दवा के तेज असर से बच्चेदानी की दीवारें जल गई थीं। इन कुत्तों को कैंसर, मधुमेह आदि बीमारियां भी थीं। कम्पनी ने तब कहा कि कुत्तों पर होने वाले परीक्षण इंसानों पर ठीक नहीं बैठते। बंदरों में भी बच्चेदानी का कैंसर हो गया था।

इसके बावजूद भी विकासशील देशों जैसे थाईलैंड, जमैका, न्यूज़ीलैंड, दक्षिण अफ्रीका में इसका परीक्षण ज़ारी रहा। आंकड़ों से पता चला है कि दुनिया भर की छह करोड़ औरतों

को यह इंजेक्शन एक साल में दिया जाता है।

हमारे शरीर पर हमला

इनमें से कुछ औरतों से पता चला है कि इसको लगवाने के बाद उन्हें काफ़ी परेशानियां उठानी पड़ रही हैं। सत्तर प्रतिशत औरतों को ज़्यादा खून जाने, बार-बार माहवारी होने, लगातार माहवारी होने जैसी तक़लीफ़ हैं। जब इंजेक्शन नहीं लगाया जाता तो काफ़ी महीने तक माहवारी बंद हो जाती है। औरतों के 'बांझ' होने का, डिप्रेशन, सरदर्द, ऊंचा रक्तचाप, किडनी और लीवर जैसी बीमारियां भी हो जाती हैं। अगर गलती से गर्भावस्था में यह लगा दिया जाए तो बच्चा विकृत पैदा हो सकता है। दूध-पिलाने वाली मांओं के लिए भी यह ख़तरनाक है। बच्चेदानी और स्तन कैंसर होने की सम्भावनाएं भी बढ़ जाती हैं।

महिला संगठनों का मिला-जुला प्रयास

अधिकांश महिला संगठनों ने मिलकर इसके खिलाफ संघर्ष करने का इरादा किया है। तीन मई को राजधानी में कुछ संगठनों ने एकजुट होकर इस निरोधक के इस्तेमाल की अनुमति वापस लेने की मांग रखी है। भारत सरकार का कहना है कि डेपो-प्रोवेरा का परीक्षण प्राइवेट कम्पनियों द्वारा किया जा रहा है। सरकार का इससे कोई सरोकार नहीं है। पर सभी परीक्षणों की जिम्मेवारी औषधि नियंत्रक की है। इसलिए संगठनों ने एक प्रेस विज्ञप्ति देकर उन पर दबाव डाला है।

हमारा शरीर हमारा हक़

ख़तरनाक गर्भनिरोधक खासकर इंजेक्शन के रूप में दिए जाने वाले औरतों पर दो तरीक़े से वार करते हैं। एक तो यह बिना औरत की जानकारी के किसी और इंजेक्शन की तरह उसको दिया जा सकता है। अनपढ़ हो या पढ़ी-लिखी, उसका स्वास्थ्य और शरीर डाक्टर पर निर्भर हो जाता है। शरीर पर हक़ तो छिनता ही है साथ ही गिरता हुआ स्वास्थ्य भी। भारत जैसे विकासशील गरीब देश में जहां बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं आम जनता को मुहैया नहीं हो पाती, वहां इन गर्भ निरोधकों से होने वाली बीमारियों के इलाज की अपेक्षा करना बेमानी है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष और विश्व बैंक के दबाव में आकर सरकार के इन फ़ैसलों का हमें कसकर विरोध करना है। हमें हमारे शरीर को बच्चा पैदा करने वाली मशीन समझने वाली सरकारी नीतियां नहीं चाहिए। हमें आबादी नियंत्रण की राजनीति नहीं चाहिए। हमें चाहिए हमारे तन और मन के प्रति जागरूक, जवाबदेह और संवेदनशील स्वास्थ्य व्यवस्था। □

जुही

देश में गर बेटियां अपमानित हैं नाशाद हैं
दिल पे रख कर हाथ कहिये देश क्या आज़ाद है।